(2) यहां पोस्ट आफ़िसों व पब्लिक काल आफ़िसों को खोले जाने के संदर्भ में विभाग के वर्तमान मानकों को बदला जाना आवश्यक है, ताकि यहां अधिक से अधिक पोस्ट आफ़िस व पब्लिक काल आफ़िस खुल सकें। वर्तमान समय में कई दूरस्थ क्षेत्रों का सम्पर्क जिला व तहसील मुख्यालयों से नहीं है। इसके अभाव में न केवल वहां प्रशासन कुप्रभावित होता है, अपितु स्थानीय जनता भी इन वर्तमान सुविधाओं से प्राप्त होने वाले लाभ से वंचित रह जाती है। वहां कई क्षेत्रों में स्थानीय सब-पोस्ट आफ़िस मे डाक आने के बाद तीन दिन डाक के बंटने मे लग जाते है।

(3) अल्मोड़ा नामक स्थान ने डी ई टी का मुख्यालय खोला जाये, ताकि जिला अल्मोड़ा-पिथौरागढ़ व चमोली के लोगों को सुविधा प्राप्त हो सके।

(4) संचार विभाग के इन जनपदो में कार्यरत कर्मचारियों के लिए आवासीय भवनों का निर्माण किया जाये, ताकि इन दुर्गम सुविधा-विहीन क्षेत्रों मे कर्मचारी काम कर सकें।

(5) यहां कार्यरत समस्त केन्द्रीय कर्मचारियों को पर्वतीय भत्ता दिया जाये, क्योंकि यहां की सेवा-स्थितियों को देखते हुए प्रान्तीय सरकार द्वारा अपने कर्मचारियों को पर्वतीय भत्ता दिया जाता है।

अत: उपरोक्त बिन्दुओं पर संचार मंत्री जी से निवेदन है कि वह अविलम्ब ध्यान देने की कृपा करें।

(viii) Need for Fertilizer factory at Chittorgarh.

प्रो० निर्मला कुमारी शक्तावत (चित्तौड़गढ़): उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान जैसे औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े प्रान्त में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का अत्यधिक अभाव है। लम्बे समय से यह मांग की जाती रही है कि एक रसायन उर्वरक कारख़ाना सार्वजनिक क्षेत्र में यहां डाला जाये। अभी हाल ही में तकनीकी विशेषज्ञों की टीम ने भी इस दृष्टि से राजस्थान का दौरा किया। मान्यवर, मेरा भी निवेदन है कि राजस्थान का चित्तौड़गढ़ जिला सब तकनीकी दृष्टियों से सर्वाधिक उपयुक्त स्थान है; क्योंकि :—

(1) चित्तौड़गढ़ के पास ही उदयपुर में झामर कोटड़ा नामक स्थान मे प्रतिदिन 600 टन राक फ़ास्फ़ेट निकलता है, जो कच्चे माल के रूप मे रसायन खाद बनाने के काम आता है। देश का 96 प्रतिशत राक फ़ास्फेट राजस्थान से ही निकलता है, जिसे ढो कर दूसरे स्थान पर ले जाना पड़ता है।

(2) इस रसायन खाद के कारख़ाने के लिए पानी की अत्यधिक आवश्यकता है। राजस्थान के इसी भाग मे सरफ़ेस वाटर उपलब्ध है। घोसुण्डा नामक स्थान पर बेडच नदी पर बांध बन रहा है, इससे इस पानी को रोका जाएगा। इस सरफ़ेस वाटर का पूरा पूरा इस्तेमाल किया जा सकता है।

(3) अभी हाल ही में कोटा-चित्तौड़गढ़ ब्राडगेज लाइन मन्जूर हो गई है। अत: यदि यह रसायन उद्योग वहा होगा, तो माल को निकालने में किसी तरह की परेशानी नही पड़ेगी।

अत: इन सब बातों का ध्यान रखते हुए उद्योग मंत्रालय का ध्यान दिलाना चाहूंगी कि राजस्थान जैसे पिछड़े प्रान्त में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का डाला जाना विकास की ओर एक महत्वपूर्ण कदम होगा। रसायन उद्योग के लिए चित्तौड़गढ़ ही सब से उपयुक्त स्थान है। इस बात का ध्यान रखा जाये।